Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

व्यवसायिक शिक्षा के माध्यम से डेयरी उद्योग की प्रगति में तालमेल को बढ़ावा देने के लिए कौशल और ज्ञान की बढ़ती महत्ता और आवश्यकता

अर्पिता राजपूत* डॉ. सीमा कुमारी**

* शोधार्थी, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत
** सहायक प्राध्यापक, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – कौशल और ज्ञान की बढ़ती हुई महत्ता, जो व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से उद्योग मे उर्जा को बढ़ावा देने से है, इसे कामकाजी विकास में एक क्रांतिकारी परिवर्तन के रुप में देखा जा सकता है। यह सारांश इस परिवर्तन में योगदान करने वाले कुंजी तत्वों की खोज करता है, और इससे उद्योगिक प्रगति पर प्रभाव को दिखाता है।व्यावसायिक शिक्षा ने उद्योगो की मांग के लिए जरुरी विशेषज्ञता को पोषित करने का एक कौशल केन्द्र बनाया है। व्यावसायिक कार्यक्रमों की विशेषज्ञता ने सुनिश्चित किया है कि व्यक्तियों को उनके चयनित पेशेवरों के साथ सीधे जोड़ने के लिए व्यावहारिक ज्ञान के साथ हाथों–हाथ ही प्रशिक्षण भी प्राप्त हो जाता है। इस व्यावसायिक कार्यक्रम का आत्मसात व्यापकता के साथ होता है, जिससे व्यक्तियों को उद्योग की आवश्यकताओं का सीधा सामंजस्य बनाया जा सकता है, जो एक तंतुवादी और प्रतिसार क्षमताओं वाली कार्यबल प्रौद्योगिकी को निरंतर बनाए रखता है।आपसी सहयोग, व्यवसायिक शिक्षा का मूल आधार है, क्योंकि उद्योगिक कार्यक्रमों को निरंतर उद्योग विशेषज्ञों के साथ परामर्श में रखा जाता है । यह सहयोगी दृष्टिकोण द्वारा सामंजस्य बनाने की प्रक्रिया सीधे आपसी विभाजनीय समझ को समृद्ध करती है, जिससे उद्योग के सामने भविष्य में आने वाली चुनौतियों के लिए एक संपूर्ण दृष्टिकोण का निर्धारण किया जा सकता है। नौकरी पर प्रशिक्षण के माध्यम से वास्तविक बुनियादी अनुभव पर जोर दिया जाता हैं। जिन्हे संपूर्ण ज्ञान प्राप्ति के बजाए व्यवसायिक योजनाओं के माध्यम से कुशल उद्यमी तैयार करने पर केन्द्रीत किया जा सकता है।नवीनतम तकनीक और उद्योग में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए व्यवसायिक शिक्षा का उपयोग प्रेरणादायक होता है। चुनौतियों को बढ़ावा देने के रुप में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम विभिन्न उद्योगों में प्रयुक्त नवीन तकनीकों और प्रक्रियाओं के विकास में योगदान करते है। यह नवाचारात्मक दृष्टिकोण व्यक्तियों को व्यावसायिक प्रगति में कुशल बनाता है, जो उनके संबंधित क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के लिए हमेशा एक दुंसरे के समानान्तर चलते है। व्यावसायिक शिक्षा समय के साथ साथ उद्योगिक नीतियो के साथ अनुकूल वातावरण का निमार्ण करके आजीवन सीखने की आधारभूत भूमिका को निभाती है। व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से युवाओं को लगातार विकास के लिए आवश्यक मानसिकता और कुशलता से परिपूर्ण कर दिया जाता है, जिससे उनमें होने वाले परिवर्तनों से तकनीकी और उद्योगिक परिस्थितियों में वह अपने कौशल का उपयोग करता है।व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त तैयार युवा उद्योगों की तत्परता के परिणाम और दीर्घकालीन मांगों को संतुलित करने में मदद करती है। कौशल से समृद्धि और स्थिरता के लिए व्यावसायिक शिक्षा में शिक्षा की रणनीति को एक विशेषज्ञता की आवश्यकताओं के साथ सामंजस्य करने से यह सार्थकता को प्राप्त कर सकता है। श्रम साधन की आवश्यकताओं के साथ अनुकूल वातावरण एवं सशक्तता प्रदान करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा एक केन्द्र के रुप में स्थापित की जा सकती है। व्यावसायिक शिक्षा कौशल और ज्ञान की बढ़ती हुई महत्वपूर्णता के माध्यम से उद्योगों में नयी उर्जा और प्रगति को प्रोत्साहित करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह स्पष्ट है कि व्यावसायिक शिक्षा ने अपने उद्योगिकी दृष्टिकोण के कारण रोजगार और स्वरोजगार के क्षेत्र में सुधार किया है और उन्हे एक सकारात्मक रुप प्रदान करने के लिए कौशल और ज्ञान का महत्वपूर्ण स्रोत्र बनाया है।

शब्द कुंजी –तंतुवादी, प्रतिसार, दृष्टिकोण, सामंजस्य, प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी, नवाचारात्मक, दीर्घकालीन।

प्रस्तावना – आज के इस तकनीकी युग में उद्योगों को तेजी से बदलते माहौल में कार्य करना है। ऐसे समय में व्यावसायिक शिक्षा न केवल कौशल ज्ञान की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, बल्कि यह तालमेल को बढ़ावा देने मे भी सहायक हो रही है। आधुनिक तकनीक और व्यावसायिक दुनिया में व्यावसायिक शिक्षा न केवल एक केरियर की दिशा में महत्वपूर्ण है अपितु उद्योग की प्रगति और आजीविका विकास के लिए कौशल और ज्ञान की वृद्धि के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। व्यावसायिक शिक्षा इस वृद्धि को प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह शिक्षा छात्रों को आवश्यक तकनीक कोशल, व्यावहारिक ज्ञान एवं उद्योगो के रुझानों से परिचित कराती है। यह उन्हे उद्योगों और आवश्यकताओं के अनुरुप बढ़ाती है। यह युवाओं को आवश्यक कौशल ओर ज्ञान प्रदान करती है, जो उन्हे रोजगार योग्य बनाता है। व्यावसायिक शिक्षा न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि यह सामाजिक एवं आर्थिक विकास का भी आधार है । व्यावसायिक शिक्षा वास्तव में कौशल विकास शिक्षा है और इसका उद्देश्य कौशल और ज्ञान का एक वाछिंत स्तर विकसित करना है, यह इस प्रकार से रोजगार एवं स्वरोजगार का मार्ग प्रदान करता है। व्यावसायिक

प्रशिक्षण छात्रों को स्वतंत्र होने के लिए और एक ही समय में एक उत्पादक समुदाय बनाने का अवसर प्रदान करता है। MSME Cluster में भी व्यावसायिक शिक्षा का व्यापक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि भारत को विकासशील से विकसीत या युकहे कि भारत को विश्वगुरु बनाने में व्यावसायिक के साथ ही उद्योगों की भूमिका महत्वपूर्ण है। युवाओं में स्वरोजगार की भावना जगाना नवीन उद्यमी पैदा करना यही नवीन व्यावसायिक शिक्षा नीति का उद्देश्य रहा है।

सुक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग आजीविका विकास के आधार स्तंभ है जिनका निर्माण व्यावसायिक शिक्षा से ही संभव है। रोजगार सृजन, युवाओं में आत्मनिर्भरता, साहस एवं जोखिम लेने की क्षमता यह सभी व्यावसायिक शिक्षा के प्रशिक्षण कार्यक्रम में है, जो युवाओं के भविष्यात्मक रुपरेखा को आधार प्रदान करता है।

व्यावसायिक शिक्षा– व्यावसायिक शिक्षा वह है जिससे युवाओं कों एक कुशल कारिगर, कुशल शिल्प एक सफल व्यापारी के रुप में व्यापार या एक तकनीशियन के रुप में कार्य करने के लिए तैयार करती है। व्यावसायिक शिक्षा को उस प्रकार की शिक्षा में भी देखा जा सकता है जो किसी व्यक्ति को अपेक्षित कौशल के साथ लाभकारी रोजगार या स्वरोजगार के लिए तैयार करने के लिए दी जाती है जिसमें कैरियर और तकनीकी शिक्षा भी शामिल है। नवम्बर 2014 को सरकार द्वारा कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय का गठन किया गया। संपूर्ण भारत में कौशल विकास गतिविधियों को सुसंगत और समेकित करने के लिए अपने प्रयासों को जारी रखते हुए सरकार 15 जुलाई 2015 को पहला कौशल भारत विकास मिशन प्रारम्भ किया। उसी दिन कौशल विकास और उद्यमिता के लिए राष्टीय नीति का शुभारम्भ किया गया। व्यावसायिक शिक्षा शिक्षा का एक ऐसा रुप है जो छात्रों को विशिष्ट व्यावसायिक कौशल ओर ज्ञान प्रदान करता है। यह युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार के लिए तैयार करता है और उन्हे उद्योगों की आवश्यकता को पूरा करने मे सक्षम बनाता है। व्यावसायिक शिक्षा रोजगार एवं स्वरोजगार के बेहतर अवसर युवाओं को प्रदान करती है, यह उन्हे उद्योगिक आवश्यकताओं के अनुरुप कौशल और ज्ञान प्रदान करती है। व्यावसायिक शिक्षा से युवाओं को आत्मनिर्भर बनाया जाना संभव हो सकेगा। इससे निश्चित ही कुशल उत्पादक कार्यबल का निर्माण होना भी संभव है जो कि देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करने में मील का पत्थर साबित होगा। एक सफल व्यावसायी निश्चित ही देश के सामाजिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। व्यावसायिक शिक्षा से ही इस स्वपन को साकार किया जाना संभव हो सकता है। व्यावसायिक शिक्षा युवाओं के जीवन को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह उन्हे रोजगार एवं स्वरोजगार के बेहतर अवसर प्रदान कराता है, उन्हे आत्मनिर्भर बनाता है। भारत सरकार द्वारा संविधान की दसवीं अनुसूची शिक्षा के क्षेत्र में राज्य और केन्द्र सरकार की शक्तियों को परिभाषित करती है, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मे व्यावसायिक शिक्षा के लिए संवैधानिक माध्यमों के कुछ उदाहरण इस प्रकार है – सरकारी विद्यालयों में व्यावासायिक पाठ्यक्रमों का शुभारंम्भ, व्यावसायिक शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति और वित्तीय सहायता प्रदान करना, व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना और व्यावसायिक शिक्षा के लिए जागरुकता अभियान चलाना आदि। औद्योगिक तालमेल बढ़ाने के लिए व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाओं को संचालित किया जा रहा है जिसे कि सरकारी राष्ट्रीय कौशल विकास मिशन, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, कौशल भारत।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोधकार्य विवरणात्मक एवं नवीन व्यवहारिक पद्धति को अपनाते हुए शोध लेख को मोलिकता प्रदान करने का प्रयास किया गया है। किसी भी शोध पत्र को तैयार करने से पूर्व यह सुनिश्चित करना होता है कि किस शोध विधि का प्रयोग करे। इस हेतु उसे कोन कोन सी आवश्यक सामग्री को प्रयोग मे लाना होगा यह एक कठिन कार्य होता है। शोध संबंधित सभी प्रकार की आवश्यक सामग्री का संग्रहण सन्दर्भ आधारित पुस्तकों, विभिन्न आयोगों के प्रकाशनों, विभिन्न शोध पत्रिकाओं, पुस्तकोलयों, आत्मलेखो तथा समाचार पत्र – पत्रिकाओं इत्यादि से संगृहित कर विवरणात्मक अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य – किसी भी शोधकार्य कार्य को प्रारम्भ करने मे सबसे पहला कार्य उसका उद्देश्य निर्धारित करना होता है। बिना किसी उद्देश्य के किसी लक्ष्य की प्राप्ति करना रेगिस्तान मे दूर कहीं पानी का आभास होने के समान होता है। अत: प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है :

1. व्यावसायिक शिक्षा को उचित स्तर प्रदान करना।
2. तकनीकी शिक्षा को बढावा देना।
3. शैक्षणिक पाठ्यक्रमों के साथ–साथ कौशल विकास पर ध्यान केन्द्रीत करना।
4. विद्यार्थियों मे सृजनशीलता एवं व्यक्तित्व विकास करना।

निष्कर्ष – प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि नई शिक्षा नीति को प्रयोग मे लाने से व्यावसायिक शिक्षा का क्षेत्र अत्याधिक प्रभावित होगा। नई शिक्षा नीति 2020 से सुक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों के प्रति प्रगतिशील सोच, टेक्नालॉजी को समन्वित करने तथा साथ ही नई शिक्षा नीति से विद्यार्थियों मे व्यावसायिक ज्ञान, कौशल, जीवन के मूल्यो और सोच में विकास करके निश्चित ही उन्हे एक नया आयाम प्रदान किया जा सकता है। नई शिक्षा नीति में व्यावसायिक शिक्षा का समावेश निश्चित ही शिक्षा के क्षेत्र मे एक क्रांतिकारी परिवर्तन के रुप में देखने को मिलेगा। शिक्षाशास्त्रीय अवधारणाएँ अधिक प्रयोगमूलक, अन्वेषणमूलक, जिज्ञासा से प्रेरित, समन्वित, विद्यार्थी केन्द्रित, लचीली और आनंददायक होगी। नई शिक्षा नीति से शिक्षा के क्षेत्र मे व्यवहारवादी, विकासात्मक कार्यो द्वारा सकारात्मक प्रयोग से रोजगार निर्माण की अनेक संभावनाए उत्घटित होने जैसे परिणाम प्राप्त होने की संभावनाएँ है। अंतत: उन्हे आत्मनिर्भर तथा आर्थिक दृष्टि से अपने समाज मे आदर्श नागरीक के रूप मे अपने पांवों पर खड़ा करने योग्य बनाया जा सकता है। इससे विद्यार्थी के जीवन स्तर मे सुधार की अनेक संभावनाएँ जन्म लेंगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका 2021
2. मानव अधिकार आयोग रिपोर्ट।
3. योजना मासिक पत्रिका।
4. नीति आयोग।
5. डॉ. भुवनेश्वरी स्वामी –ICT से शिक्षा और सिखने की पद्धति में सुधार 2018